हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न पत्र (निबन्ध एवं नायक)

Time Allowed : Three hours Maximum marks : 100

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

(क) "हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते–होते यहाँ तक खंड हुए कि अब तक नए–नए धर्म और मत प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं। ये टुकड़े जितने वैष्णवों में अधिक है उतने शैव–शाक्तों में नहीं और आपस में एक का दूसरे के साथ मेल और खान–पान जितना कम इनमें है उतना औरों में नहीं। राम के उपासक कृष्ण के उपासक आपस में लड़ते हैं कृष्णों के उपासक रामोपासकों से इत्तिफाक नहीं रखते। कृष्णोपासकों में भी सत्यानासिन अनन्यता ऐसे आड़े आई है कि यह इनके आपस ही में बड़ा खटपट लगाए रहती है।" 10

अथवा

"स्वदेश और स्वधर्म की रक्षा के निमित्त राजस्थान ने बड़ा भारी उत्सर्ग किया है। उच्च शौर्य, भव्य–त्याग, आत्म बलिदान, शरणागत–पालन और स्वातन्त्र्य–प्रेम का जो ज्वलंत आदर्श राजस्थानी साहित्य में कूट–कूट कर भरा है, वह ।कसी भी सहृदय व्यक्ति का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर सकता है। इतना ही नहीं, किसी भी काल का सच्चा वीर उससे किसी अंश में अवश्य स्फूर्ति ग्रहण कर सकता है। 'रण खेती राजपूत री' और सचमुच ही योद्धाओं के रक्त से सींची जाकर इस मरूथरा ने जो खेती उपजाई है, जो कवि–रत्न, दान–रत्न और वीर–रत्न उत्पन्न किये हैं, उनका स्मरण भी आज रोमांच और हर्षोद्रेक का कारण हो सकता है।"

(ख) "दुनिया में कौन धोखा नहीं करता? ये बड़े–बड़े साम्राज्य, बड़े–बड़े राष्ट्र, बड़ी–बड़ी संस्थाएं, बड़े–बड़े व्यापार ये सब क्या छल–कपट पर नहीं चलते? बड़े–बड़े नेताओं और विजेताओं की सफलता और ख्याति की नींव क्या कपट और छल पर नहीं रखी गई? रात–दिन तुम इस नारकीय स्कूल में झक–झक करते रहते हो। मेहनत करते हो, मरते हो, आंखें और दिमाग फोड़ते हो और इस सारे श्रम के बदले में तुम पाते क्या हो? इज्जत और आराम की रोटी भी तुम्हें प्राप्त नहीं, ठीक तरह से खा–पी भी तो नहीं सकते। मैं कहता हूँ–बस पी जाओ! दुनिया में धोखा वही है, जो उसकी आँखों में छिपाया न जा सके।" 10

अथवा

"तुम्हारे अंगूठे से रक्त की धारा बही। अब हृदय से रक्त की धारा बहेगी तो मैं कैसे रोक सकूंगी। मेरे लाल। मेरे चंदन। जाओ, यह रक्त धारा अपनी मातृभूमि पर चढ़ा

http://questionpaperesult.com/

Scanned by CamScanner

दो। आज मैंने दीपदान किया है, दीपदान। अपने जीवन का दीप मैंने रक्त की धारा पर तैरा दिया है। ऐसा दीपदान भी किसी ने किया है! एक बार तुम्हारा मुख देख लूँ। कैसा सुन्दर और भोला मुख है।"

(ग) "जिन्दगी अजीब नाटक है।..... अपने किए ये कुछ नहीं होता। जो होना है, हो जाता है। और तारीफ यह है कि वह भी हमसे यानी, उससे जो वैसा नहीं करना चाहता है, वह करवा लेता है। ..... यह कैसी परीक्षा है। ..... एक तरफ खेड़ा और दूसरी ओर अपना प्रण..... एक दम एक लो। क्या करूं? बुद्धि कुछ काम नहीं करती।"

अथवा

"यह फैसला समाज करेगा कि अन्याय और अत्याचार से लड़ना जुर्म है या नहीं। बच्चों के लिए पाठशाला खुलवाना जुर्म है या नहीं। निहत्थे पर गोली बरसाना वीरता है या कायरता–अपराध है या आर्शीवाद। ..... इसकी कतई चिन्ता नहीं है कि मुझे मौत की सजा सुनाई जाने वाली है। मुझे इसकी जरूर चिन्ता है कि जिस आतंक के लिए साजिश की गई है, वही आतंक उनको निगलता जा रहा है और आगे भी निगलता जाएगा। अभी वे जानते नहीं है। समय आने पर उन्हें इस बात का अहसास होगा, जरूय होगा। तब इनके सामने कोई अन्य रास्ता शेष नहीं रह जाएगा।" 10

2. सामाजिक मूल्यों से क्या तात्पर्य है? 'तुलसी के सामाजिक मूल्य' निबंध के आधार पर भक्ति आन्दोलन के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।
(शब्द–सीमा : 500 शब्द) 18 अंक

अथवा

'राष्ट्र का स्वरूप' निबन्ध के आधार पर राष्ट्र की अवधारणा और संस्कृति का राष्ट्रीय जीवन में महत्व पर विचार व्यक्त कीजिए। (शब्द–सीमा : 500 शब्द)

3. 'दीपदान' एकांकी के आधार पर एकांकी की समीक्षा करते हुए पन्नाधाय की चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन कीजिए। (शब्द–सीमा : 500 शब्द)18 अंक

अथवा

'सबसे बड़ा आदमी' एकांकी का कथानक सार लिखते हुए इस एकांकी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (शब्द–सीमा : 500 शब्द)

4. 'रक्त ध्वज' नाटक की कथावस्तु की समीक्षा कीजिए।
(शब्द–सीमा : 500 शब्द)18 अंक

अथवा

डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर द्वारा रचित 'रक्त ध्वज' नाटक की मूल संवेदना स्पष्ट करते हुए विवेचना कीजिए कि लेखक अपने उद्देश्य में कहाँ तक सहमत हुआ हैं?
(शब्द–सीमा : 500 शब्द)

5. नाटक के उद्भव व विकास को सविस्तार समझाइए।
(शब्द–सीमा : 500 शब्द)18 अंक

अथवा

निम्नलिखित में किन्हीं चार पर टिप्पणियाँ लिखिये–

http://questionpaperesult.com/

Scanned by CamScanner

1. नाटक व एकांकी में अंतर
2. निबंध की परिभाषा और उसके तत्त्व
3. नाटककार जयशंकर प्रसाद
4. एकांकीकार उपेन्द्रनाथ अश्क
5. निबंधकार महावीर प्रसाद द्विवेदी
6. अभिनय शीलता एवं रंगमंचीय का एकांकी में महत्त्व
7. भारतेन्दु हरिशचन्द्र का निबंध विद्या में योगदान।

http://questionpaperesult.com/

Scanned by CamScanner